प्रशासक सम्मेलन

उदघाटन सत्र

आत्मिक गुणों की धारणा से होगी विकारों से मुक्ति – प्रदीप पटेल

प्रजाापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की भगिनी संस्था राजयोग एज्यूकेशन एवं रिसर्च फाउन्डेशन के अंतर्गत कार्यरत प्रशासक प्रभाग द्वारा शांतिवन–मनमोहिनीवन परिसर के ग्लोबल ओडिटोरियम में तीन दिवसीय **"प्रशासको हेतु आध्यात्मिक दिशादर्शन"** विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन के उदघाटन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में वक्तब्य देते हुए भ्राता प्रदीप पटेल, अध्यक्ष म.प्र. पिछड.ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक वित विकास निगम, भोपाल नें कहा कि मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है, जिसमें महसूसता की शक्ति होती है। मनुष्य मशीन नहीं है, इसलिए वह महसूसता की शक्ति के आधार से स्वयं में परिवर्तन ला सकता है। आज मानव मन विकारों से ओतप्रोत है जिसके कारण उसे यथोचित सफलता नहीं मिलती इसलिए सर्वप्रथम हमें स्वयं को विकारो से मुक्त बनाना होगा, और विकारें से मुक्ति के लिए आध्यात्मिक ज्ञान एवं राजयोग की महती आवश्यकता है जो ब्रम्हाकुमारीज के अलावा कहीं और नहीं सिखाया जाता। सास्कृतिक एकता के प्रति जागरूकता लाने हेतु म.प्र. शासन द्वारा चलाई गई एकात्म यात्रा में ब्रह्माकुमारीज की सहभागिता को सराहते हुए उन्होनें कहा कि यहां के प्रशासन को देख यह सीख मिलती है कि साधना और दृढ. इच्छाशक्ति से साधनों के अभाव में भी कुशल प्रशासन किया जा सकता है।

संस्थान के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार बृजमोहन जी नें अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए कहा कि परमात्मा जो कि सर्वोच्च प्रशासक है, जिन्होंने हम मनुष्यों को सुप्रशासन हेतु आध्यात्मिक दिशादर्शन (spiritual Compass) दिया था जिसके आधार से आधाकल्प इस सृष्टि मंच पर सुशासन चला परंतु हम मनुष्यों नें मनोविकारों से ग्रसित होकर उस आध्यात्मिक दिशादर्शन को खो दिया। अब पुनः परमात्मा इस सृष्टि मंच पर अवतरित होकर वह आध्यात्मिक दिशादर्शन दे रहे हैं जिसके लिए ही यह प्रशासक सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

संस्थान की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी जी ने आशीर्वचन देते हुए कहा कि अगर आप में आत्मिक प्यार, प्रेम और स्नेह है, तो आपसे शक्तिशाली और कोई नहीं। उन्होंने सुशासन के लिए प्रशासकों को पाँच गुणों–पवित्रता, सत्यता, धैर्यता, गम्भीरता और नम्रता/मधुरता को धारण करने का आहवान किया और कहा कि इन गुणों को धारण करने के लिए आठ शक्तियों – सहनशक्ति, समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति, सहयोग करने की शक्ति, सामना करने की शक्ति, परखने की शक्ति, निर्णय शक्ति और विस्तार को संकीर्ण करने की शक्ति की आवश्यकता होती है जो कि राजयोग के निरंतर अभ्यास से हमारे अंदर आती है। उन्होंने आगे कहा कि सारे आध्यात्मिक ज्ञान का सार ही है, इस बात की समझ की मैं कौन ? मेरा कौन ? और मैं किस लिए यहाँ आयी हूँ ?

दादी जी के आशीर्वचन के पश्चात् सम्मेलन का विधि पूर्वक दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन किया गया जिसमें मंचासीन अतिथियों के साथ–साथ देश के विभिन्न प्रांतों एवं नेपाल से आये प्रमुख अधिकारियों तथा प्रशासक प्रभाग के क्षेत्रीय संयोजकों एवं कार्यकारी सदस्यों ने सहभागिता की।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि भ्राता व्ही. शशांक शेखर, आई. ए. एस., संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार नें कहा कि जिस प्रकार हम किसी परफ्यूम की फैक्ट्री में जाते हैं, तो आपे ही हमारे से खुशबू आने लगती है। ठीक उसी प्रकार संतों का सानिघ्य पाकर हमारे अंदर सद्गुणों की खुशबू आ जाती है। उन्होने प्रशासकों से भैातिकवाद और आध्यात्मवाद में सामंजस्य लाने का आव्हान करते हुए कहा कि आध्यात्मिक विज्ञान हमें हमेशा प्रकाशित करता है, उर्जान्वित करता है। आध्यात्मिक ज्ञान हमें सिखाता है कि देना ही लेना है अर्थात जितना हम दूसरों को देते हैं, उतना हमारे पास आता है।

संस्थान के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई जी नें सर्वप्रथम मंचासीन अतिथियों एवं सम्मेलन में पधारे प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि आप सभी को यहां आध्यात्मिक दिग्दर्शन प्राप्त होगा, जिससे आप स्वयं पर शासन कर सकेगे और सुप्रशासन भी कर सकेंगे।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी बीं. के. अवधेश नें सभी को राजयोग का अभ्यास कराया। जयपुर से पधारी बी. के. पूनम बहन नें कुशल मंच संचालन किया। मुलुन्द से पधारी ब्रम्हाकुमारी बहनों नें अतिथियों का तिलक एवं गुलदस्तों से स्वागत किया। भोपाल एवं हैदराबाद से आए बाल कलाकारों नें सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर सबके मन मोह को लिया। प्रशासक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्रह्माकुमार हरीश भाई नें रमणीकता से सभी के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि सभी को इस सम्मेलन में अपने आप को आंतरिक शक्तियों सं भरपूर होकर भाग्य को बदलना है।